कक्षा की पाठ वस्तु से पुस्तकालय का जुड़ाव

कथा एवं कथेतर साहित्य की सम्भावनाएँ और सीमाएँ

अनिल सिंह

ज्ञान निर्माण का सारा दायित्व पाठ्यपुस्तकों पर ही डाल दिया जाता है। लेख कहता है कि पाठ्यपुस्तकों की अपनी सीमाएँ हैं और यह सीमाएँ होंगी भी। सभी कुछ पाठ्यपुस्तकों में शामिल नहीं किया जा सकता। इसीलिए पाठ्यपुस्तकों से इतर पुस्तकों का होना, बच्चों के साथ उनपर बातचीत करना और उनकी इन किताबों के प्रति दिलचस्पी बनाना ज़रूरी है। ये बच्चों को किसी अवधारणा के प्रति उनका नज़रिया विस्तृत करने में मददगार होती हैं। लेखक अपनी कक्षा के उदाहरण देते हुए बताते हैं कि पाठ्यपुस्तकों के साथ अन्य साहित्य का होना सीखने-सिखाने को कैसे समृद्ध करता है। वे आरम्भिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में शामिल अवधारणाओं और उनसे सम्बन्धित कथेतर व कथा साहित्य की पुस्तकों के नाम भी सुझाते हैं। -सं.

पृष्ठभूमि

आमतौर पर यह देखा गया है कि पाठ्यपुस्तक की तुलना में पुस्तकालय का बाल साहित्य अधिक आकर्षक, पाठक से जुड़ाव बनाने, और गहरी छाप छोड़ने वाला होता है। पाठ्यपुस्तक की पाठ सामग्री कई बार मानक, सपाट एवं जटिल हो सकती है, वहीं बाल साहित्य अपने भाषाई लालित्य, सौन्दर्य और जीवन्तता के कारण पाठक को न सिर्फ़ लुभाता है, बल्कि उन्हें बाँधकर भी रखता है।

पाठ्यपुस्तकें एक मानक भाषा के साथ एक मानक सामग्री को शामिल करती हैं। उनकी कोशिश होती है कि वे ज़्यादा-से-ज़्यादा स्कूली विषयों, और उनमें भी चुने गए मसलों, को प्रतिनिधित्व दे पाएँ। लेकिन अपनी तमाम सीमाओं के चलते बहुत सम्भव है कि भारत जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता-भरे देश में वह आदर्श समावेशन न कर पाए। इसके अलावा, अलग-अलग बच्चों की रुचि और रुझान, व उन्हें जिसमें आनन्द आता है, उसकी जगह भी पाठ्यपुस्तक में नहीं मिल सकती। पुस्तकालय यहाँ एक अहम भूमिका निभा सकता है। पाठ वस्तु से कथा एवं कथेतर साहित्य के जुड़ाव और उसकी ज़रूरत को इस सम्भावना के सन्दर्भ में देखा जा सकता है कि यह कक्षा में पाठ वस्तु को विस्तार देगा, उसके लिए सम्पूरक होगा, और कई बार अवधारणात्मक समझ की राह बनाएगा।

पाठ वस्तु से पुस्तकालय के जुड़ाव के सन्दर्भ में नज़रिया

इस जुड़ाव को तीन दृष्टिकोणों और उद्देश्यों से देखा जा सकता है :

1. **पाठ वस्तु के ज़रिए बाल साहित्य की ओर और बाल साहित्य के ज़रिए पाठ वस्तु की ओर उन्मुख करना** : यह एक ऐसा मार्ग है जो दोनों तरफ़ से आता और जाता है। अगर किसी पाठ में आए सन्दर्भ और अवधारणा के लिए आप उससे जुड़ाव बनाते हुए बाल साहित्य का चुनाव करते हैं और कक्षा में उसे लेकर आते हैं, तब यह इस बहाने से बाल साहित्य की ओर उन्मुख होने का ज़रिया बनता है।

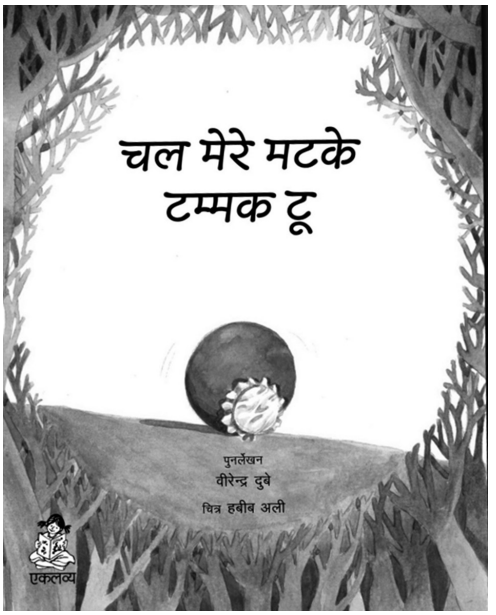

उदाहरण के लिए, *'चल रे मटके टम्मक टूँ'* कविता जोकि पाठ्यपुस्तक का एक हिस्सा है, उसके साथ ही आप 'चल रे मटके टम्मक टूँ' पर प्रकाशित रंगीन सचित्र किताब का भी इस्तेमाल करते हैं, या अपनी कक्षा में 'चल रे मटके टम्मक टूँ' पर बना रंगीन सचित्र कविता पोस्टर लगाते हैं, तब आप बच्चों को साहित्य की ओर उन्मुख करते हैं। हमारी पाठ्यपुस्तक केन्द्रित शिक्षण व्यवस्था के चलते बच्चे तमाम कारणों से पाठ्यपुस्तक, कक्षाकार्य और परम्परागत कक्षा शिक्षण से बँध जाते हैं। कक्षा में विषयवस्तु से जुड़ाव बनाती हुई पुस्तकालय की किताबों को लाकर आप इस बन्धन को तोड़ सकते हैं, और इनके प्रति जुड़ाव को सहज बना सकते हैं। बच्चे धीरे-धीरे पाठ्यपुस्तकों के साथ पुस्तकालय के कथा या कथेतर साहित्य को भी कक्षा का हिस्सा मानकर उसके साथ अपना रिश्ता बना सकते हैं।

2. पाठ वस्तु में निहित पात्र, घटना, मूल्य, भावना या विचार को बाल साहित्य में विस्तार देना: पाठ्यपुस्तकों में ऐसे बहुत-से पाठ, प्रकरण या टॉपिक होते हैं, जिनमें निहित मूल्य, भावना या विचार को एक सीमा तक ही बताया जा सकता है। लेकिन पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य तरह-तरह के सन्दर्भों, घटनाओं और पात्रों के माध्यम से इन मूल्यों, भावनाओं व विचारों पर अलग-अलग दृष्टिकोण से रोशनी डालता है। दोस्ती, संवेदनशीलता या मदद का मूल्य किसी पाठ में एक सीमित तरीक़े से बताया जा सकता है, लेकिन पुस्तकालय में उपलब्ध विविध कथा साहित्य में इसे पूरा विस्तार मिलता है।

नरम गरम दोस्ती में जहाँ दो अभावग्रस्त बच्चे एक ही बड़े स्वेटर से गुज़ारा करके दोस्ती, संवेदनशीलता, ज़रूरत जैसे मूल्यों को स्थापित करते हैं, वहीं *मुकुंद और रियाज़* एक ख़ास परिस्थिति में दोस्ती के भाव का एक अभूतपूर्व उदाहरण है। और सिर्फ़ इंसानी दोस्ती या लगाव ही नहीं, बल्कि जानवरों और प्रकृति के प्रति दोस्ती और लगाव भी बाल साहित्य में पूरेपन से जगह पाते हैं। *मेरा बायसन* में याक जैसे जानवर के साथ एक बच्ची की निश्छल दोस्ती या *एक बड़ा अच्छा दोस्त* में एक छोटी कौवी और हाथी की बेमेल दोस्ती की कहानियाँ दोस्ती की अलग-अलग रंगतों की बात कहती हैं। इस तरह का बाल साहित्य पाठ्यपुस्तक में निहित मूल्य, भावना या विचार को विस्तार देता है।

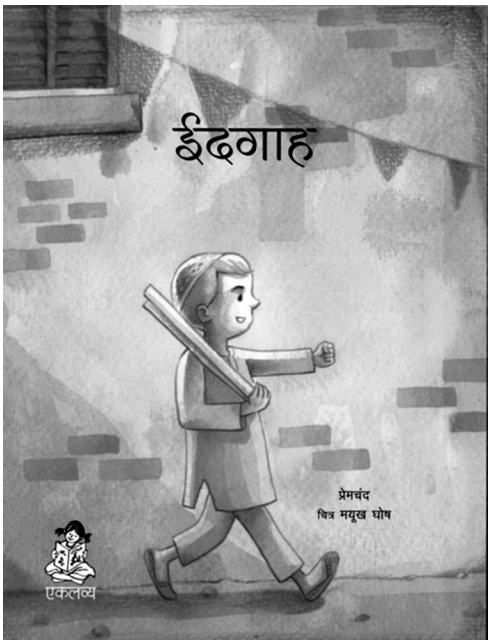

3. पाठ वस्तु की समझ के लिए संपूरक सामग्री के रूप में बाल साहित्य को देखना : यह एक बेहद महत्त्वपूर्ण पहलू है, जिसका नाता शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों से भी है। पाठ्यपुस्तकों में विविधता, देश, भौगोलिक बनावट, समाज और व्यवस्था, आदि से जुड़े अनेक पाठ होते हैं। तमाम सीमाओं के चलते बहुत संक्षेप में या सतही तरीक़े से इनपर बात की जाती है। बाल साहित्य इन अवधारणाओं के लिए सम्पूरक सामग्री बनने का एक बड़ा ज़रिया होता।

उदाहरण के लिए, प्रेमचंद की कहानी *'ईदगाह'*, कई कक्षाओं की भाषा की पाठ्यपुस्तकों में मिलती है। लेकिन इस कहानी में कहानी का कटाई-छँटाई वाला रूप पढ़ने को मिलता है। कई सारी सीमाओं के साथ इस कहानी में वो हिस्से पढ़ने को नहीं मिलते, जिनके लिए प्रेमचंद जाने जाते हैं। लेकिन एकलव्य, सहमत या बीजीवीएस द्वारा प्रकाशित ईदगाह में पूरी कहानी बिना किसी काट-छाँट के हमें पढ़ने को मिलती है। हर पाठक को यह मिलनी भी चाहिए। ऐसे में पुस्तकालय की ईदगाह पाठ्यपुस्तक की *ईदगाह* के लिए सम्पूरक बन जाती है।

इसके अलावा, बहुत-सी कहानियों में पाठ्यपुस्तक के ज़रिए बताई गई धारणाओं, मूल्यों व एहसासों को एक सीमित नजरिए से बताया जाता है लेकिन यही बातें बाल साहित्य में अलग अलग नज़रिये से मिलती हैं। बारिश में उल्लास और खेल की बहुत सी कविताएँ व कहानियाँ पाठ्यपुस्तक में मिल जाती हैं लेकिन 'बारिश का एक दिन' कहानी की किताब बारिश में किसी कच्ची बस्ती में रहले वाले समुदाय की दिक्कतों और उसके संघर्ष का ब्योरा पेश करती है।

इन कहानियों में अलग-अलग सन्दर्भों व परिस्थितियों में इन अवधारणाओं को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिससे इनकी एक व्यापक और गहरी समझ बनती है। समानता, जेंडर, आवास, बसाहट, संस्कृति, परिवेश, स्थानीयता या क्षेत्रीयता कुछ ऐसे विषय हैं, जिनके बारे में विविध कथा साहित्य के माध्यम से बेहतर और सम्पूरक समझ बनाई जा सकती है।

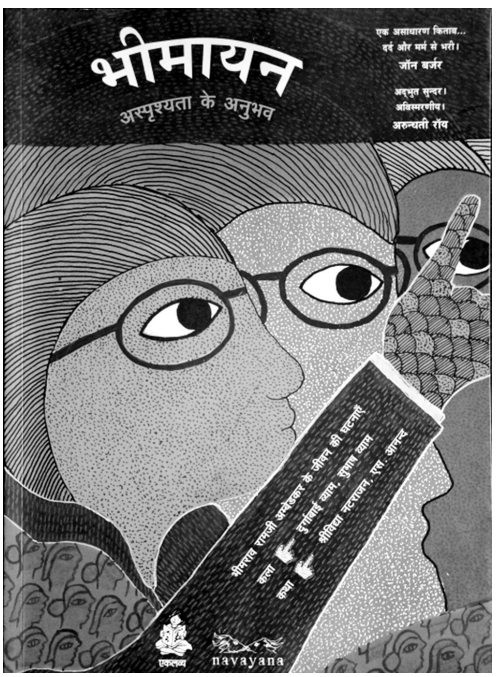

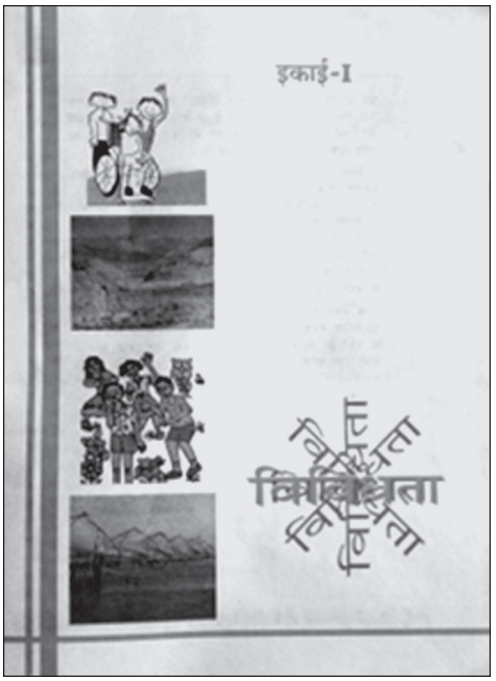

पुस्तकालय से पाठ वस्तु का जुड़ाव और उसकी सम्भावनाएँ

उपरोक्त तीनों दृष्टिकोणों और उद्देश्यों को देखते हुए जब हम पाठ वस्तु से कथा या कथेतर साहित्य को जोड़कर देखते हैं, तब हमें कई तरह की स्थितियाँ और सम्भावनाएँ दिखती हैं। एक वह स्थिति है, जिसमें पाठ वस्तु की कोई अवधारणा, तथ्य, विचार या तत्त्व हमें किसी कथा या कथेतर साहित्य में दिखाई देते हैं।

उदाहरण के लिए, विविधता। यह अवधारणा अकसर कक्षा 6 व 7 के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती है। विविधता, धार्मिक, जातिगत, खान-पान, रंग-रूप, भाषाई, शारीरिक बनावट, दक्षता, आदि के रूप में हो सकती है। यह नहीं हो सकता कि पाठ्यपुस्तक विविधता के इन सभी पहलुओं पर विस्तार से बात करे, कर ही नहीं सकती। यहाँ पाठ्यपुस्तकों से इतर पुस्तकों की भूमिका अहम हो जाती है। पाठ्यपुस्तक में पाठ पढ़ाने से पहले या बाद में, या पाठ पढ़ने के दौरान भी, ऐसी पुस्तकों को देखा जा सकता है। बच्चों को ऐसी पुस्तक पढ़ने को कहा जा सकता है, जो विविधता की अवधारणा को रखती हो। इनके पीछे लक्ष्य है अपने से इतर लोगों के बारे में जानना, और फिर बराबरी, सबको शामिल करना, सामंजस्य, आदि के बारे में समझ बनाना। इसके लिए कई किताबों के उदाहरण हो सकते हैं। ध्यान रखने की बात यह है कि इन पुस्तकों में विविधता को स्तर से न जोड़ा गया हो, और इनको पढ़कर बच्चों की समझ के साथ उनमें अन्य लोगों के लिए इज़्ज़त भी बढ़े। यह इसलिए आवश्यक है कि अकसर लोगों का अनुभव, रहन-सहन और खान-पान भी बहुत अलग-अलग होता है। बच्चों में विविधता के बारे में संवेदनशीलता पैदा करना बहुत ज़रूरी है।

इस तरह के बाल साहित्य की पुस्तकों के कुछ उदाहरण हैं : *सिर का सालन, माछेर झोल, अनोखा संसार, भीमायन, काली और धामिन साँप, तंबी के साथ सैर, मुझे समझ नहीं आता, गुठली तो परी है,* आदि। यह सब कथा साहित्य में हैं। मैंने भी अपनी कक्षा में 'विविधता' अध्याय पर काम करने से पहले काली और धामिन साँप और माछेर झोल जैसी कहानियाँ बच्चों को सुनाई थीं। बच्चों ने कहानियों में बहुत मज़ा लिया और संवेदनशीलता के साथ इन्हें समझा। काली और धामिन साँप कहानी में कक्षा में साँप के आने से जो भगदड़ मची और शिक्षक टेबल के नीचे छुप गए, कहानी की यह बात उन्हें बेहद चिर-परिचित लगी। कहानी में एक बच्चा 'काली' ऐसे समुदाय से है जिसके लिए साँप पकड़ना रोज़मर्रा का काम है। बच्चों को ऐसे समुदाय और ऐसे एक काम के बारे में जानना बड़ा अच्छा लगा। बच्चे काली के साथ पूरी सहानुभूति रख रहे थे। उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी कि कहानी में दूसरे बच्चे काली से इस कारण दोस्ती नहीं रखते थे, क्योंकि उसका खाना अलग था।

अर्णव ने कहा कि काली बहादुर है, उसने पूरी क्लास को साँप से बचाया। साँप पकड़ने वाले समुदाय के बारे में बात करते हुए अनिसा ने कहा कि वे उसे बेचकर और पालकर पैसा कमाते हैं। इसी के साथ, सपेरा और कालबेलिया समुदायों के बारे में भी बात हुई। काली खाने में

दीमक की सब्ज़ी लाता है, इसे लेकर बच्चों को थोड़ा असहज ज़रूर लग रहा था। इस मुद्दे पर भी बात की गई कि अलग-अलग स्थानों पर वहाँ उपलब्ध खाने-पीने की चीज़ों और परम्परा के अनुसार लोगों का खान-पान बहुत अलग होता है। लोगों में पत्तियाँ, फल, फूल, बीज, माँस, अनाज, कच्चा-पक्का, उबला, भुना, स्टीम किया, गलाया या सुखाया हुआ खाना खाने की अलग-अलग आदतें और ज़रूरतें होती हैं। बच्चे भी खान-पान से जुड़े अपने अनुभव रख रहे थे। भिण्डी और बैंगन वाली कढ़ी, अंबाड़ी और चौलाई की भाजी, दलिया, खिचड़ी, बड़ी और तिली के बिजौरे, कमलनली की सब्ज़ी जैसी खाने की चीज़ों के बारे में जानकारी को बच्चों ने साझा किया।

माछेर झोल कहानी में गोपू के नेत्रहीन होने की बात कहानी के बिलकुल अन्त में खुलती है। और इसका ज़िक्र भी किसी करुणा या सहानुभूति की भावना के साथ नहीं, बल्कि सामान्य तरीक़े से होता है। कहानी पूरी होने के बाद बच्चे इस बारे में पलटकर सोचते हैं कि गोपू ने किस तरह एक सामान्य बच्चे की ही तरह पूरा रास्ता तय किया। इस तरह, बिलकुल भिन्न जीवन परिस्थितियों और जीवन कौशल का अनुभव बच्चों को मिला।

इसी तरह, इस बातचीत में 'विविधता और भेदभाव' अध्याय के लिए कमला भसीन की किताब *लड़का क्या है लड़की क्या है?, सतरंगी लड़के सतरंगी लड़कियाँ, मेरा नाम गुलाब है* और *मितवा* बहुत उपयोगी हो सकती हैं। इन किताबों को अलग-अलग समय पर बच्चों के साथ मिलकर पढ़ना और इनपर बातचीत करना, बच्चों की विविधता की समझ को व्यापक कर सकता है। जैसे– ये किताबें किस तरह के प्रश्नों, विचारों को रखती हैं; इनमें बताए हुए जीवन सन्दर्भ और परिस्थितियों से बच्चे कैसे जुड़ते हैं; वग़ैरह।

मैंने भाषा की और सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में इन किताबों के इस्तेमाल के अच्छे

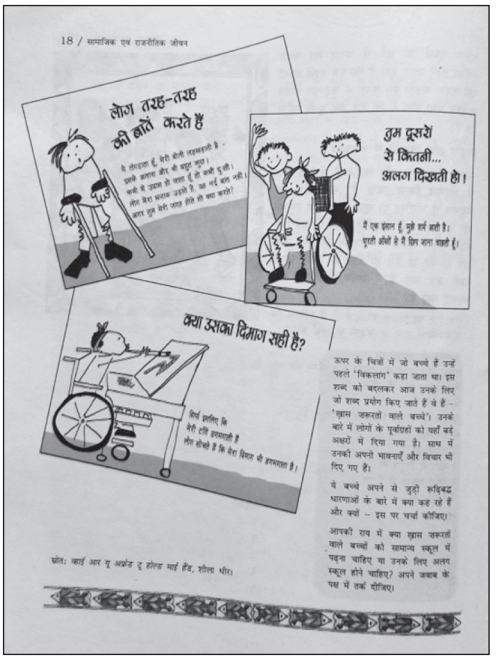

परिणाम देखे हैं। बच्चे इन मसलों को गहराई में और विविध जीवन सन्दर्भों में समझकर इनके प्रति एक बेहतर नज़रिया बना पाते हैं। मितवा, लिंग-आधारित भेदभाव और पूर्वाग्रहों की बात करती है। *मितवा* नाम की किशोर लड़की इन धारणाओं पर प्रश्न उठाती है और इन्हें चुनौती देकर पूर्वाग्रहों को तोड़ती है। मितवा कहानी के बाद बच्चों ने अपने परिवार और आस-पड़ोस में होने वाली बातचीत और घटनाओं को इससे जोड़ा। रोशनी ने बताया कि उसकी माँ दोनों हाथों में पानी से भरी बाल्टी लेकर नल से घर तक आ जाती है, लेकिन दादी या पापा को इसलिए नहीं लाने देती कि उनकी कमर लचक जाएगी। रोशनी ने बताया कि उसके पापा तो कारीगर हैं वो भी मेहनत का काम करते हैं, लेकिन पानी भरने के काम से दादी उनको रोक देती है।

आशीष ने कहा कि उसे खाना बनाने का शौक़ है, पर माँ छोटी बहन से ही रसोई का काम कराती है। नाज़नीन ने बताया कि उसकी ख़ाला को तीन बच्चियाँ हो गईं है, इसलिए अब घर में उसके प्रति व्यवहार अच्छा नहीं

होता। गोपाल ने बस्ती की एक लड़की पुष्पा के बारे में बताया कि वह पैंट-शर्ट ही पहनती है, और दिनभर साइकिल से पूरा बाज़ार घूमती है। उसने बाल भी लड़कों जैसे कटा रखे हैं। वह ज़्यादातर लड़कों के साथ ही खेलती है। इस मसले पर बच्चों के साथ बात करने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि जिसे जो करने का मन है, वह करने में अगर किसी को कोई दिक़्क़त नहीं है तो फिर रोक-टोक करने की ज़रूरत ही क्या है। लिंग-आधारित भेदभाव, पूर्वाग्रहयुक्त छवियों या धारणाओं पर इस कहानी से अच्छी समझ बन पाई। इसी कहानी में आए शब्द और मुहावरों, जैसे– धौंस जमाना, वीर जी, मँजी, आदि शब्दों पर भी बात हुई। बच्चों के लिए ये नए शब्द थे।

गाँव का बच्चा, प्यारी मैडम, मोर डूंगरी जैसी किताबों में परिवेश और पर्यावरण की बात है। *गाँव का बच्चा* किताब में सामुदायिक जीवन शैली और बच्चों के पालन-पोषण में समुदाय की साझेदारी की बात बेहद सहज तरीक़े से और एक कहानी में पिरोकर की गई है, वहीं *प्यारी मैडम* में आदिवासी इलाक़ों में जीवन के संघर्ष और स्थानीय संसाधनों पर अधिकार तथा बाहरी क़ब्ज़े के द्वन्द्व की बात एक बच्ची द्वारा अपनी शिक्षिका को लिखे पत्रों के माध्यम से की गई है। इसमें वह बच्ची कुछ बुनियादी सवाल भी उठाती है, जिनमें आदिवासी समुदाय, जंगल

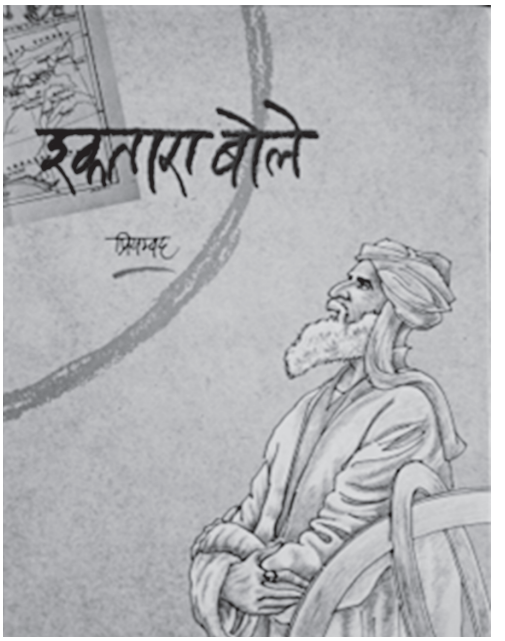

और पर्यावरण से जुड़ी चिन्ताएँ दिखती हैं। अब ये विचार कक्षा 5 के पर्यावरण अध्ययन (आस-पास) के पाठ 18 'जाएँ तो जाएँ कहाँ' और पाठ 20 'किसके जंगल' से सीधे जुड़ते हैं, क्योंकि इन पाठों में भी जंगलों और आदिवासी समुदाय के परस्पर सम्बन्धों व मुद्दों के बारे में बात की गई है। बच्चे इस कनेक्शन को देख पाते हैं कि उनके शहरी और ग्रामीण जीवन में किस तरह के बुनियादी फ़र्क़ हैं। इसके साथ ही यह भी कि आदिवासी समुदाय का जीवन प्रकृति और जंगलों से किस तरह अन्तर्सम्बन्धित है।

इन सबसे, जहाँ एक ओर पाठ वस्तु को कथा के संसार में समझने में मदद मिलती है, वहीं पाठ के साथ पुस्तकालय की इन किताबों का इस्तेमाल बच्चों के समालोचनात्मक चिन्तन और दृष्टिकोण को मज़बूत करता है।

उदाहरण के लिए, कक्षा 6 और 7 के मध्यकालीन इतिहास के लिए कथेतर श्रेणी की *इकतारा*

बोले किताब बेहद उपयोगी होगी। इस किताब में विभिन्न यात्रियों की नज़र से उस काल के इतिहास को रोचक तरीक़े से जाना-समझा जा सकता है। अलग-अलग यात्रियों ने अलग-अलग समय पर भारत की यात्राएँ कीं। फाह्यान, ह्वेनसांग, इब्न बतूता, अल्बरूनी और वास्कोडिगामा ने उस समय के भारत में जो देखा और समझा, उससे हमें उस समय की एक झलक मिलती है। बच्चे अलग-अलग कालखण्डों को समझ पाते हैं। किताब के पाठ 'नए राजे-रजवाड़े', 'मुग़ल सल्तनत' और 'दिल्ली सल्तनत' के अलावा, तमाम अतिरिक्त मामलों की जानकारी भी इस किताब से हो सकती है।

इसी तरह 'आदिम लोग' अध्याय के लिए एकलव्य द्वारा प्रकाशित सी एन सुब्रह्मण्यम् की दो छोटी-छोटी किताबें, *जब पुरुषों ने शिकार किया तब महिलाओं ने क्या किया* और *जब महिलाओं ने शिकार किया तब पुरुषों ने क्या किया,* शिकारी मानव के जीवन को समझने और उस समय स्त्री व पुरुषों के सम्बन्धों को समझने में मददगार हैं। इसी तरह, कक्षा 4, 5 और 6 की भूगोल में मानचित्र और उसमें अनुपात की अवधारणा को समझने के लिए तूलिका प्रकाशन की *समीर का घर* बेहद उपयुक्त किताब है। एक घर से शुरू करके, गली, मुहल्ला, शहर, प्रदेश, देश, महाद्वीप से होते हुए ग्रह और ब्रह्माण्ड तक की अवधारणा को बेहद तार्किक और चित्रात्मक ढंग से इस किताब में समझाया गया है। इसी तरह, एएण्डए प्रकाशन की किताब

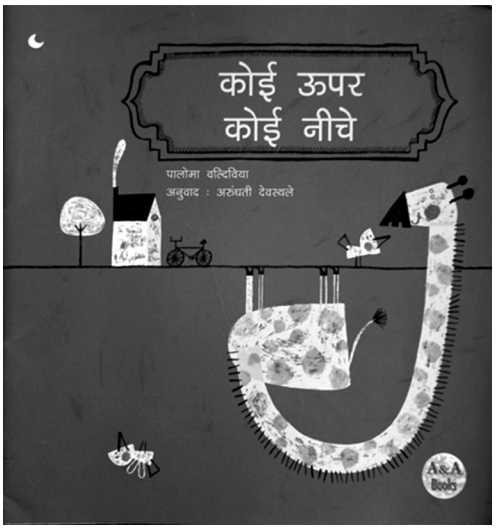

कोई ऊपर कोई नीचे उत्तरी व दक्षिणी गोलार्ध की अवधारणा से बच्चों को परिचित कराने के लिए अभी तक की सबसे बेहतर किताब है। इन किताबों की भाषा, चित्र और कथा संसार, पठन की अभिरुचि के साथ विषय को स्वतंत्र रूप से समझने और अपनी-अपनी धारणा बनाने में मददगार होते हैं।

कक्षा 6 की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक में पाठ 15 'नौकर' में एक घटना के ज़रिए गाँधीजी की दिनचर्या से एक दिन की झलक दिखाई गई है। पर गाँधी और उनकी दिनचर्या को और जानने-समझने के लिए बाल साहित्य में जन शिक्षा निदेशालय, बिहार सरकार की *एक था मोहन* और *बापू की पाती* बेहद उपयुक्त किताबें साबित हो सकती हैं। ये किताबें किसी पात्र के पूरे जीवन प्रसंगों, सामाजिक बनावट, देश, काल और वातावरण में किसी बात को समझने में भी सहायक हैं।

इसके अलावा, कक्षा 6 और 7 की विज्ञान में 'आर्कमिडीज़ के सिद्धान्त' पर कथा के माध्यम से समझ बनाने के लिए अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे एक बड़ी ही अच्छी किताब है। यह किताब कहीं भी इस सिद्धान्त का, या इसे वैज्ञानिक तरीक़े से समझाने का कोई ज़िक्र नहीं करती, लेकिन कथा और घटना के माध्यम से इसकी

तार्किक समझ बनाती है। इसी तरह, 'पानी के चक्र' को समझने के लिए बाल्टी में समंदर जैसी किताबें काफ़ी मददगार हो सकती हैं। सामान्य सवाल-जवाब के माध्यम से यह किताब रोज़मर्रा के जीवन का आधार लेते हुए इस पूरी अवधारणा को समझा देती है।

विज्ञान में ही कक्षा 6, 7 और 8 में 'शरीर क्रिया विज्ञान' और 'प्रजनन तंत्र' को समझने के लिए हमारा शरीर और बेटी करे सवाल जैसी कथेतर किताबें और पादप जगत में 'वनस्पतियों के परिवार' व 'प्रजाति' के ही साथ 'जैव विकास' को समझने के लिए *जंगली सरसों के उपहार* बेहतर किताब है। एकलव्य की *दिलकश केंचुए,* और स्कोलिस्टिक प्रकाशन की *कछुआ, गिलहरियाँ, साँप, मछलियाँ* कुछ ऐसी किताबें हैं, जो इन जीव-जन्तुओं के बारे में बेहद रोचक तरीक़े से जानकारी को रखती हैं। *सौर-मंडल, चाँद, सूरज* और *पृथ्वी* शीर्षक की कथेतर किताबें भी इन विषयों को बहुत ख़ूबसूरती से खोलती और पेश करती हैं। इसी तरह, कथेतर साहित्य में *टेलीफोन की कहानी, टीवी की कहानी, रेलगाड़ी की कहानी* कुछ ऐसी किताबें हैं, जो इन आविष्कारों की रोचक घटनाओं और इनकी मशीनी कार्यप्रणाली पर नज़र डालती हैं। ये सचित्र व रंगीन किताबें इन्हीं विषयों में एक रोचकता पैदा करती हैं और इन विषयों या तथ्यों के बारे में किताबी भाषा से अलग एक ऐसा संसार रचती हैं, जो पठन को प्रोत्साहित करने के साथ ही इनके बारे में और जानने के लिए उत्सुकता पैदा करता है।

पर्यावरण के मुद्दों को रोज़ाना के जीवन सन्दर्भों में समझने के लिए एकलव्य की किताब *आबोहवा में बदलाव के अफसाने* बेहत अनूठी किताब है। यह एक ऐसी किताब है जिसके माध्यम से नागरिक अधिकारों के नज़रिए से पर्यावरण के मुद्दों को सरलता से समझा जा सकता है।

हिन्दी कक्षा 6 में ही हेलेन केलर की कहानी *जो देखकर भी नहीं देखते,* को कक्षा में पढ़ाने के साथ ही अन्यथा सक्षम (differently

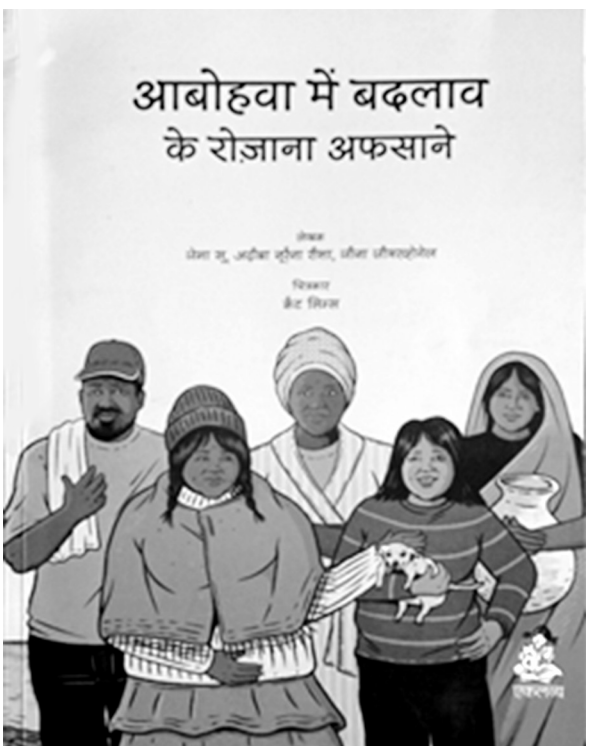

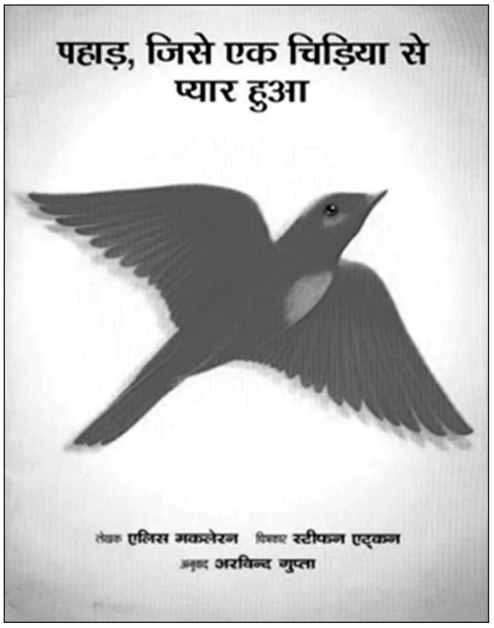

abled) लोगों के बारे में भी पुस्तकालय की दूसरी अन्य किताबों को पढ़ा और बताया जा सकता है। इनमें *मेरी बहन को दिखाई नहीं देता, बम्बू, तंबी के साथ सैर, माछेर झोल, गप्पू नाच नहीं सकती,* आदि किताबें काम में ली जा सकती हैं। इस मसले को सिर्फ़ शारीरिक सीमाओं तक सीमित न रखते हुए, इसमें विभिन्न प्रकार की सीमाओं, जैसे– रूढ़ि और परम्परा की सीमा, संसाधनों के अभाव की सीमा, भौगोलिक चुनौतियों की सीमा आदि, से सम्बन्धित कहानियाँ भी शामिल की जा सकती हैं। इस तरह, पुस्तकालय का संसार बहुत व्यापक और आकर्षक है, जो पाठ्यपुस्तक की सामग्री को काफ़ी आगे ले जाता है। यह बच्चों के स्वतंत्र पाठक बनने की राह आसान बनाता है और संसार को जानने की उत्सुकता पैदा करता है।

पाठ वस्तु के लिए पुस्तकालय के उपयोग की प्रमुख बातें

- यह समझना ज़रूरी है कि पुस्तकालय एक पूरक है, और इसमें उपलब्ध किताबें पाठ्यक्रम समझने में मदद करती हैं। पुस्तकालय की पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों की मददगार हैं, बाधक नहीं।
- विषय की समझ बनाने और बढ़ाने के लिए अतिरिक्त पठन सामग्री की उपलब्धता और विषय के साथ एंगेज होने के विविध मौक़े महत्त्वपूर्ण हैं।
- पाठ वस्तु में निहित अवधारणाओं एवं मुद्दों को पुस्तकालय की किताबों से जोड़कर और इनकी मदद से अवधारणाओं की व्यापक और गहरी समझ बनाई जा सकती है।
- पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य की मदद से अवधारणाओं एवं मुद्दों पर विभिन्न दृष्टिकोण की झलक दिखाई जा सकती है, और पाठ वस्तु को विविध जीवन सन्दर्भों में दिखाकर उसे जीवन से जोड़ा जा सकता है।
- पुस्तकालय की किताबों में बच्चों की विषय में रुचि बढ़ाई जा सकती है, जो उनमें पाठ वस्तु को साहित्य में देखने और समझने की दृष्टि बनाती है।
- पाठ्यपुस्तकों की सीमाओं को पार करते हुए बाल साहित्य के माध्यम से कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण, प्रासंगिक और विविधतापूर्ण बनाया जा सकता है।

पाठ वस्तु से साहित्य के जुड़ाव की सीमाएँ और जोख़िम

अकादमिक दृष्टि से यह काम बेहद प्रभावकारी हो सकता है। कथा और कथेतर साहित्य से पाठ वस्तु की कठिनता और एकरसता को कम करने में मदद मिलती है, उसको समझने के दूसरे सिरे खुलते हैं, और उसमें निहित अवधारणा या विचार को कथा में विस्तार मिलता है। वहीं दूसरी ओर, यह प्रयास कथा साहित्य से जुड़ाव का एक माध्यम भी

बनता है। हालाँकि, इसकी सीमाएँ भी हैं। ऐसा न हो कि यह प्रयास बच्चों में कथा या कथेतर साहित्य को सिर्फ़ एक पूरक या दोयम दर्जे की सामग्री समझने की ग़लत धारणा या उसे आनन्द या रस लेने की बजाय हमेशा ही कुछ सीखने, समझने या जानकारी हासिल करने का उपकरण मानने की मानसिकता पैदा कर दे।

उदाहरण के लिए, पौधों में प्रजनन के एक अध्याय में प्रजनन का एक तरीक़ा बीजों के बिखराव का है। अब इस हिस्से को पढ़ाने के बाद या पढ़ाते समय शिक्षक *पहाड़ जिसे एक चिड़िया से प्यार हुआ* (तूलिका प्रकाशन) कहानी का ज़िक्र कर सकते हैं, किताब दिखा सकते हैं, या पूरी अथवा आंशिक तौर पर कहानी सुना सकते हैं। इस महान कहानी में एक छोटा-सा, किन्तु प्रासंगिक, ज़िक्र यह है कि एक दिन वह चिड़िया एक बीज लाकर पहाड़ पर छोड़ जाती है और बारिश के बाद वहाँ एक पौधा उग आता है। इस तरह, साल-दर-साल धीरे-धीरे वहाँ एक पूरा जंगल तैयार हो जाता है।

यह उदाहरण पौधों में प्रजनन के तहत 'बीजों के बिखराव' की अवधारणा को एक कहानी में सुन्दर तरीक़े से घटित होने को दर्शाते हुए कहानी में आए ज़िक्र से उस तथ्य को समझने में तो मदद करता है, लेकिन साथ-ही-साथ उस किताब या कहानी से प्रेम हो जाने की सम्भावना को भी कमज़ोर करता है। दरअसल, यह कहानी एक सुन्दर भाषा, चित्रांकन और कथा का बहुत अच्छा उदाहरण है। यह बच्चों में साहित्य से लगाव होने का रास्ता खोलती है, संवेदना गढ़ती है और पहाड़ की पीड़ा के प्रति सरोकार और चिड़िया के स्नेह के प्रति सहज मानवीय मूल्य भी स्थापित करती है।

लेकिन अगर इस कहानी को सिर्फ़ विज्ञान के तहत 'बीजों के बिखराव' की अवधारणा समझाने के मक़सद से ही पढ़ा या सुनाया जाएगा, तब कहानी के साहित्यिक तत्त्व की अनदेखी हो सकती है। ऐसे में, यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि एक उदात्त और निश्छल प्रेम की महान कहानी, 'बीजों के बिखराव' जैसे मामूली और अकादमिक तथ्य को समझने का एक उपकरण मात्र बनकर न रह जाए। साहित्य का उद्देश्य पढ़ने के आनन्द से गहरे जुड़ा हुआ है। हाँ, यह उद्देश्य पाठ्यपुस्तकों की अवधारणाओं को विस्तार ज़रूर देता है, लेकिन साहित्य पाठ्यपुस्तकों की सहायक सामग्री मात्र बनकर न रह जाए। कथा का सौन्दर्य और उसका भाषाई लालित्य, कहीं कक्षा में इस तरह के इस्तेमाल की बलि न चढ़ जाए, इस बात के प्रति सजग रहने की बड़ी ज़रूरत है।

अनिल सिंह पिछले 20 बरसों से भी अधिक समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। गए 15 सालों से प्राथमिक शिक्षा ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र है। सात सालों तक भोपाल में वैकल्पिक स्कूल के मॉडेल आनन्द निकेतन से जुड़े रहे और वहाँ भाषा व सामाजिक विज्ञान शिक्षण का काम किया। वर्तमान में पराग के लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में बतौर फ़ैकल्टी जुड़े हुए हैं।

सम्पर्क : bihuanandanil@gmail.com